SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-02, December- 2024
www.shikshasamvad.com

"गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों में क्षमता निर्माण"

Capacity Building of Teachers, for quality Education

डॉ मानिक मोहन शुक्ल
विभागाध्यक्ष बी•एड•विभाग
ए•एम•कालेज गया

सारांश

शिक्षा मानव जीवन का आधार है । मानव का विकास और उन्नयन शिक्षा पर ही निर्भर है । शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है और श्रृंगार भी करती है। जन्म के समय बालक अपनी मूल प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर पशुपत आचरण करता है,शिक्षा उसकी इन प्रवृत्तियों का उचित मार्गदर्शन करके उसे परिपकक्ता प्रदान कर, उसके व्यवहार,आचरण और क्रियाकलापों को उचित और समाजोपयोगी बनती है। शिक्षा व्यक्ति में रचनात्मक शक्ति का विकास कर उसे वातावरण के साथ अनुकूलन करने में समर्थ बनती है । शिक्षा ही मानव को अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, असत्य से सत्य की ओर,तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर जाने के लिए प्रेरित करती है, प्रोत्साहित करती है और निर्देशित करती है। शिक्षा ही मानव जीवन में उच्चता उत्कृष्ट और पवित्रता लाती है । शिक्षा के कारण ही मानव आज सभ्यता के इस उच्च शिखर पर पहुंच पाया है।

मानव के विकास एवं प्रगति के लिए शिक्षा अमोघ शक्ति के समान है । इसीलिए संपूर्ण विश्व अपने भविष्य को आकार देने में शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण साधन मानता है, जिससे सुयोग्य एवं रचनाशील श्रम शक्ति के निर्माण में सहायता मिले, जिससे नई प्रौद्योगिकी एवं उच्च ज्ञान को आत्मसात कर सभ्य समाज का निर्माण कर सामाजिक बदलाव किया जा सके।

शिक्षण प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों- अध्यापक -छात्र व पाठयवस्तु में नि:संदेह अध्यापक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। योग्य अध्यापकों का देश उज्जवल भविष्य का देश माना जाता है, और कोई भी देश अपने अध्यापकों की स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता। श्रेष्ठ अध्यापकों के अभाव में सुयोग्य छात्र गण अच्छी पाठयवस्तु होते हुए भी वांछित ज्ञानार्जन में सफल नहीं हो सकते हैं । अच्छी से अच्छी से अच्छी पाठ्यवस्तु भी निपुण अध्यापकों के अभाव में प्राणहीन हो जाती है। शिक्षक एक ऐसा शक्ति पुंज एवं प्रेरणा स्रोत होता है, जो मानसिक धरातल एवं आधार भूमि तैयार करके एक मुर्दा राष्ट्र को भी पुनर्जीवित करने का सामर्थ्य रखता है ।एक योग्य अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करता है । योग्य एवं क्षमतावान अध्यापक छात्रों को वंचित व्यवहार परिवर्तन में सहायता प्रदान करते ह है,जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके । अध्यापक शिक्षा प्रणाली का केंद्र होता है तथा समस्त शिक्षा व्यवस्था उसके चारों तरफ विचरण करती है । अध्यापकों को शिक्षा व्यवस्था का प्राण कहना भी अनुचित नहीं होगा क्योंकि अध्यापक ही शिक्षा व्यवस्था को जीवंत बनता है । देश केबच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने में शिक्षकों की भूमिका नि:संदेह सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है इसलिए शिक्षकों की क्षमता निर्माण पर विशेष ध्यान देने की आवशयकता है । क्षमता वान शिक्षक ही अपने विधार्थियों को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं । प्रस्तुत शोध-पत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों में क्षमता निर्माण पर बल देने पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है जिससे समाज को अच्छे शिक्षक मिल सके।

प्रस्तावना-----

मानव जीवन को सार्थक एवं श्रेष्ठ बनाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन शिक्षा ही है l शिक्षा के द्वारा ही हम उच्च आदर्शों,आकांक्षाओं और विश्वासों को आत्मसात करते हैं, और अपनी सांस्कृतिक संपत्ति को शिक्षा के द्वारा ही नई पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं। शिक्षा का संबंध केवल जीने की कला मात्र से नहीं अपितु स्वयं जीवन के आदर्शों से जुड़ी हुई है। प्रत्येक समाज एवं राष्ट्र के कुछ आदर्श होते हैं जिन्हें मूल्यों की भाषा में अभिव्यक्त किया जाता है l शिक्षा के द्वारा शिक्षकों के माध्यम से इन मूल्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। आज जिस तेजी से मानवीय मूल्यों में गिरावट आ रही है, एवं नागरिकों में अपने उत्तरदायित्वो से विमुख होने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है जिससे यह प्रतीत होता है कि शिक्षा अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में पूर्णता सफल नहीं हो रही है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आशय जो अपने निर्माण के उद्देश्यों को समझती हो और बालकों के लिए फायदेमंद हो l अर्थात गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का तात्पर्य सभी के लिए समान और मानक शिक्षा है जो आजीवन सीखने और ज्ञान की प्राप्ति को बढ़ावा दे।

आज समाज समाज में अपराधों की बढ़ती संख्या, युद्ध, बीमारी का प्रकोप, भारी आर्थिक मंदी, जलवायु परिवर्तन,आदि तमाम कारकों से निपटने के लिएदेश के प्रत्येक बालक बालिका को गुणवत्तापूर्ण शिक्षादिया जाना आवश्यक है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रत्येक बालक बालिका को पाने का मौलिक अधिकार है और यह शिक्षा छात्र- छात्राओं को केवल परीक्षा के लिए नहीं बल्कि जीवन के लिए तैयार करती है l

" हमारा वर्तमान समाज व राष्ट्र परिवर्तन व विकास के एक नाजुक परंतु अत्यंत महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है ऐसी स्थिति में अध्यापक का उत्तरदायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है। अध्यापक ही देश के भावी नागरिकों अर्थात युवा वर्ग के छात्र-छात्राओं के वास्तविक संपर्क में आता है और उन्हें अपने आचार- विचार तथा ज्ञान के अवरोध से प्रभावित करता है l अध्यापकों के ऊपर राष्ट्र के भावी निर्माता को तैयार करने का दायित्व होता है। किसी भी राष्ट्र के सामाजिक तथा आर्थिक विकास का सूत्रधार अध्यापक ही होता है l समाज की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, आकांक्षाओं,आदर्शों और मूल्यों को वास्तविक रूप देने की जिम्मेदारी भी अध्यापकों को वहन करनी होती है l वास्तव में अध्यापक अपने प्रयासों से भावी समाज की संरचना करते हैं इसीलिए अध्यापकों को सामाजिक अभियंता (Social -Engineer) के नाम से भी संबोधित किया जाता है राष्ट्रीय विकास के कार्य में अध्यापकों की भूमिका तथा योगदान को देखते हुए अध्यापकों को राष्ट्र निर्माता भी कहा जाता है"।-

प्राचीन काल से ही समाज में भावी नागरिकों के सर्वांगीण विकास का कार्य अध्यापकों को सौंपने की परंपरा रही है l अध्यापकों का कार्य केवल ज्ञान व संस्कृति के संरक्षण तथा हस्तांतरण तक ही सीमित न रहकर परिस्थितियों के अनुरूप आवश्यक सामाजिक परिवर्तन लाना भी है l राष्ट्रीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विभिन्न क्षेत्रों के लिए सृजनशील नेतृत्व को विकसित करना, तथा स्वतंत्रता समानता और न्याय पर आधारित नवीन सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करने का लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना भी अध्यापकों का ही उत्तरदायित्व है।

डॉ•सर्वपल्ली राधाकृष्णन आयोग के अनुसार "समाज में अध्यापक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परंपराओं व तकनीकी कौशलों के हस्तांतरण के लिए साधन के रूप में तथा सभ्यता की ज्योति को प्रज्जवलित करने में सहायता प्रदान करता है"l

वर्तमान काल में शिक्षा के स्वरूप को सुधारने के लिए जो प्रयत्न किया जा रहे हैं उसमें अध्यापकों के क्षमता के निर्माण की समस्या की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है l श्री एम•सी•छागला के अनुसार -- योग्य एवं क्षमतावान शिक्षकों की सहायता के बिना कोई भी शिक्षा क्रम

उन्नति नहीं कर सकता l योग्य अध्यापकों का देश उज्जवल भविष्य का देश होता है। कोई भी देश अपने अध्यापकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है"l

*** विषय वस्तु-----**

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर चर्चा हो रही है l शिक्षा के संरचनात्मक ढांचा में बदलाव किया गया है लेकिन जो भी बदलाव किया गया उसे क्रियान्वयन का दायित्व शिक्षकों पर है l क्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सरकार के पास ऐसी कोई नीति है जिससे शिक्षकों के क्षमता निर्माण को प्रोत्साहन मिल सके ?

शिक्षा के निजीकरण की आंधी का सबसे बुरा असर अगर देखे तो शिक्षकों के क्षमता निर्माण पर पड़ा है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि हमारे देश में आजादी के बाद अगर कहीं सबसे अधिक कमजोरी आयी है तो वह है अध्यापक शिक्षा का क्षेत्र l अध्यापक शिक्षा का जिस तरह से व्यवसायीकरण हो रहा है वह आने वाले समय के लिए खतरे की घंटी है l जिस देश में लगभग 90% शिक्षक -प्रशिक्षण संस्थाएँ निजी हाथों में हों, जिन पर सरकार का कोई नियंत्रण न हो, जिसमें प्रशिक्षण दे रहे अध्यापकों का खुद का कोई भविष्य न हो, वह शिक्षकों में क्षमता का निर्माण करेंगे मुझे तो कदाचित इसमें संदेह है ? आज गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं शिक्षकों में क्षमता निर्माण से संबंधित मामला राष्ट्रीय चिंतन का विषय है।

गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के कार्य में शिक्षकों की भूमिका नि :संदेह प्रभावी होती है l बदलते सामाजिक जगत की मांगों को पूरा करके कक्षा-कक्ष के अध्यापन को जीवंत बनाकर, रोजगार जगत के अपेक्षित कौशलों का विकास करके एवं उच्च स्तरीय नैतिक मूल्यों का संवर्धन करके शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है। इसके लिए पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या व पाठ पुस्तकों में बदलाव लाने होंगे, एवं शिक्षकों को उच्च स्तरीय आत्मविश्वास विषयगत आदतन जानकारी देते हुए उन्हें प्रभावी शिक्षण कौशलो तथा आधुनिक सूचना व संचक्षण प्रौद्योगिकी से युक्त करना होगा। और यह का निरंतर करते रहना होगा। इसके लिए केंद्र व राज्य सरकारो तथा शिक्षा के अभिकरणों व नियामक संस्थाओं तथा शिक्षण संस्थानों को आगे जाकर सतत प्रयास करने होंगे। सभी शिक्षण संस्थानों को गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक पर्याप्त व सुविधाजनक कक्षा कक्षों से युक्त समुचित भवन, आधुनिकतम उपकरणों वाली प्रयोगशाला, उत्कृष्ट पुस्तकों व जनरलों से युक्त पुस्तकालय तथा कंप्यूटर प्रयोगशाला आदि से संपूर्ण परिपूर्ण होना चाहिए। विभिन्न शिक्षण संस्थानों के द्वारा अलग-अलग प्रवेश परीक्षाओं के स्थान पर एक ऐसी अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा के आयोजन पर विचार करना होगा जो संप्रति के स्थान पर अभिरुचि पर अधिक ध्यान देते हुए अध्यापक शिक्षाके लिए सर्वोत्तम चयन कर सके"l

शिक्षकों का कार्य बाल मस्तिष्क का नहीं बल्कि बाल व्यक्तित्व का विकास करना है l इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए केवल विषयों को जानकारी एवं उसे प्रस्तुत करना ही पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि अध्यापकों की क्षमता बढ़ाने के लिए ऐसे कार्यक्रमों को अपनाना होगा जो अध्यापकों को मानवीय गुणों से संपन्न व्यक्ति बनने में सहायक हो। क्योंकि शिक्षक एक ऐसा शक्ति पुंज एवं प्रेरणा स्रोत होता है जो मानसिक धरातल एवं आधार भूमि तैयार करके एक मुर्दा राष्ट्र को भी पुनर्जीवित करने का समर्थ रखता है l अध्यापकों के पास धर्म की धरोहर होती है, मर्यादाओं का नि:क्षेप होता है और इतिहास की छाती होती है, जिससे संभाल कर रखना, उसे बढ़ाना और आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करना यह अध्यापकों का दायित्व है जिस दिन अध्यापक अपने इन कार्यों से विमुख हो जाएगा उसे दिन धूप का रंग काला पड़ जाएगा।

वर्तमान समय में हमारे देश में योग्य एवं क्षमता वान शिक्षकों का अकाल था पड़ गया है, ऐसी स्थिति में-- शिक्षा के उद्देश्य कितने भी श्रेष्ठ और महान क्यों न हो,पाठ्यक्रम कितना भी उपयोगी अग्रदर्शी, जनतंत्र अग्रदर्शी, जनतंत्रीय,लचीला और व्यापक क्यों न हो, शिक्षण विधियां

कितनी भी मनोवैज्ञानिक और छात्रोंपयोगी क्यों न हो, शिक्षण सामग्री कितनी भी प्रभावशाली और रुचि पूर्ण क्यों न हो,भौतिक सुविधाएं कितनी भी क्यों न उपलब्ध हों यदि शिक्षक प्रभावशाली नहीं है वह अपने विषय का विशेषज्ञ नहीं है उसे अपने कार्य में रुचि नहीं है और उसमें अपने कार्यों को सुचारू रूप से संपादित करने की क्षमता नहीं है, और उसका दृष्टिकोण व्यापक नहीं है, तो वह छात्रों में उसे भावना का विकास कदापि नहीं कर सकता है जिसकी समाज को आवश्यकता है l एक क्षमता वान और योग्य शिक्षक ही अपने कार्य- व्यवहार एवं व्यक्तित्व के द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास कर सकता है।

शिक्षण प्रक्रिया के दौरान प्राप्त ज्ञान तथा कौशल के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान करता है व्यक्तिगत विकास, सामाजिक प्रगति व राष्ट्रीय उन्नति में शिक्षा का अत्यंत सार्थक योगदान होता है l "प्रजातांत्रिक राष्ट्र में शिक्षा के द्वारा कम से कम तीन लाभ अवश्य संभव है l प्रथम --- शिक्षित व्यक्ति अपने व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन की समस्याओं को ठीक ढंग से समझ कर उनका समाधान उचित ढंग से कर सकता है, जिससे वह मानसिक व शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ रहकर राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में अपना अधिकतम योगदान दे सके। दित्तीय --- शिक्षित व्यक्ति अपने कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वो को ठीक ढंग से समझ कर उनका निर्वाहन कर सकता है, और समाज में शांति व्यवस्था बनाए रखने तथा समाज के चहुमुखी विकास करने में अपना योगदान दे सकता है। तृतीय --- शिक्षित व्यक्ति अपने रोजगार के लिए प्रभावशाली ढंग से कार्य कर सकता है जिससे उसकी व्यक्तिगत आर्थिक उन्नति होगी तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी"l

अध्यापक शिक्षा आज प्राथमिक शिक्षा और विश्वविद्यालय शिक्षा के बीच की कड़ी है स्कूल और विश्वविद्यालय को जोड़ने का काम करती है इसलिए विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा अध्यापकों को क्षमता वान बनाना अति आवश्यक है।चाणक्य का कथन है कि "शिक्षक सामान्य नहीं होते शिक्षक की गोद में प्रलय एवं सृजन दोनों खेलते हैं" इसलिए यदि समाज के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना है तो इसके लिए शिक्षकों में क्षमता का निर्माण करना ही होगा।

*** उपसंहार ------**

शिक्षक का कार्य समस्त कार्यों में उत्तम एवं पवित्र माना जाता है क्योंकि विद्यादान के समान अन्य कोई दूसरा कार्य नहीं है l विद्यादान करने वाला व्यक्ति अर्थात शिक्षक ही एक ऐसा व्यक्ति होता है जो परिवार के बाद बालक के संवेगात्मक व्यवहार को सबसे अधिक प्रभावित करता है। वर्तमान समय में शिक्षकों की क्षमता में गिरावट देखी जा रही है जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव समाज और राष्ट्र पर पड़ रहा है l आज शिक्षक अपने विद्यादान एवं राष्ट्र निर्माण संबंधी भूमिका को भूल गए भूल गए हैं, और वे केवल वेतन भोगी कर्मचारी बनकर रह गए हैं, साथ ही साथ गलत प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख होने से शिक्षक की गरिमा भी धूमिल हुई है l यदि समाज में शिक्षक को गुरु जैसे पद पर प्रतिष्ठित रहना है तो उसे समाज के उन्नयन में अपना उत्तरदायित्व भी अधिक के महत्वपूर्ण ढंग से निर्वहन करना होगा और साथ ही साथ सरकार/ समाज/एवं शिक्षण संस्थानों को भी शिक्षक की क्षमता को बढ़ाने पर ध्यान देना होगा तभी समाज को क्षमता वान शिक्षक मिल सकते हैं। क्षमता वान शिक्षकों के बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की बात कहना बेमानी साबित हो रही है।

आधुनिक शिक्षा जगत में इस अवधारणा को बल मिला है कि शिक्षक जनजात नहीं होते बल्कि निर्मित किए जाते हैं l शिक्षकों को विभिन्न शिक्षण कौशलों से सुसज्जित कर उनमें क्षमता का विकास किया जाता है, उन्हें शिक्षण की प्रक्रिया में निपुण बनाया जाता है l यह सर्वविदित है कि शिक्षकों में क्षमता बढ़ाने एवं कुशल प्रभावशाली एवं दक्ष शिक्षक तैयार करने का उत्तरदायित्व शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों पर है। किंतु मेरा अपना मानना यह है कि शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएं अपनी दिशा भटक गई हैं और इसीलिए उनकी दुर्दशा है l आज की अधिकांश शिक्षक - प्रशिक्षण संस्थाएं क्षमतावान शिक्षक तो दूर एक सामान्य शिक्षक का भी निर्माण करने में अपने आप को सक्षम नहीं पा रही हैं। शिक्षक एक

जटिल प्रक्रिया है हमारे शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रमुख केंद्र प्रवीण दक्ष एवं क्षमता बढ़ शिक्षकों का निर्माण करना होना चाहिए।जब तक हम क्षमता वान शिक्षकों का निर्माण नहीं करेंगे तब तक हम समाज के बालक- बालिकाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कदापि नहीं दे सकते हैं।

महात्मा गांधी के अनुसार "एक आदर्श शिक्षक वह होता है जो छात्रों का मित्र, पथ प्रदर्शक तथा सहायक हो l उनका विश्वास था कि शिक्षा के संबंध में किए गए प्रयोगों की सफलता शिक्षक पर निर्भर करती है l गांधी जी ने सदैव इस बात पर बल दिया है कि हमें अपने बालकों के लिए सर्वोत्तम शिक्षक खोजना चाहिए भले ही यह खोज कितनी भी महंगी क्यों न हो l उनका विचार था कि विद्यार्थी को पुस्तक की अपेक्षा शिक्षक से अधिक सीखना है l गांधी जी ने कहा कि एक कायर एवं क्षमता विहीन शिक्षक अपने विद्यार्थियों को कभी भी शूरवीर बनने में सफल नहीं हो सकता,उन्होंने एक आदर्श शिक्षक की अपेक्षा करते हुए कहा कि शिक्षक को सत्य, अहिंसा, प्रेम, न्याय, सहानुभूति एवं श्रम का पुजारी होना चाहिए,उसे चरित्रवान कर्तव्य निष्ट, मिलनसार, संयमी, क्षमाशील धार्मिक तथा क्रियाशील होना चाहिए"l

निष्कर्ष एवं सुझाव -------

किसी भी देश में यदि शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ानी है तो इसका प्रमुख स्रोत अध्यापक शिक्षा संस्थान होते हैं। क्योंकि जिस प्रकार से शिक्षक -प्रशिक्षण संस्थान होंगे उसी प्रकार वहां शिक्षकों का निर्माण होगा l किसी भी अध्यापक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह उन बालकों को अच्छी तरह से समझता हो जिन्हें वह पढ़ रहा है। शिक्षा को बाल केंद्रित मानने के कारण यह आवश्यक है कि अध्यापक पाठ्यवस्तु के साथ-साथ बालकों के प्रकृति को भी अच्छी तरह से समझे l विभिन्न आयु के बालकों की वृद्धि व विकास किस प्रकार से होती है, बालकों की आवश्यकता क्या है, बालक किस प्रकार से सीखते हैं, बालकों को सीखने के लिए प्रोत्साहित कैसे किया जा सकता है,बालकों में वांछित अभिवृत्ति व मूल्य कैसे विकसित किये जा सकते हैं, बालकों के समवेगों को कैसे नियंत्रित परिवर्तित व संशोधित किया जा सकता है, बालकों में हीन ग्रंथियां के विकास पर कैसे अंकुश लगाया जा सकता है,बालको के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कैसे किया जा सकता है,--जैसे अनेक प्रश्नों का उत्तर बाल मनोविज्ञान व शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन के उपरांत ही जाना जा सकता है l एक प्रशिक्षित व क्षमता वान अध्यापक इन प्रश्नों का उत्तर खोज कर बालक के विकास को सरलता व सुगमता से संभव बना सकता है l

क्षमता निर्माण -शिक्षकों को रचनात्मक रूप से सोचने और विभिन्न चुनौतियों के लिए नए विचारों और समाधानों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है l क्षमता निर्माण से सहयोग और उत्पादकता में वृद्धि होती है, नवाचार और रचनात्मकता के लिए अधिक स्थान रहता है, अधिक अनुकूलन शक्ति और लचीलापन बनता है, क्षमता स्तंभ में संरचना, दक्षताएं,प्रबंधन प्रणाली, सक्षम नीतियां,ज्ञान और सीखना तथा नेतृत्व यह सभी गुण एक क्षमता वान शिक्षक में होने चाहिए l क्षमता निर्माण निरंतर और अविराम गति से चलने वाली प्रक्रिया है।

यदपि संपूर्ण राष्ट्र के लिए क्षमता वान शिक्षक तैयार करने हेतु अध्यापक शिक्षा के समन्वित विकास को सुनिश्चित करने के लिए, अध्यापक शिक्षा प्रणाली के मानकों व गुणवत्ता के निर्धारण व उनकी समुचित देखभाल करने के लिए, अध्यापक शिक्षा से संबंधित अन्य समस्याओं पर विचार करने के लिए केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद का गठन किया है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता के उन्नयन की दिशा में एक सार्थक प्रयासकर रही है l गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को कई कारक प्रभावित करते हैं-- जैसे शिक्षक की क्षमता, व्यक्तित्व, संचार कौशल और प्रकृति, कक्षा में सुरक्षित वातावरण बनाना,छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना,नासिक छात्रों की अधिगम की क्षमता और बुद्धि का प्रयोग,श्रव्य -दृश्य सामग्री का अधिक से अधिक उपयोग,संसाधन सीखने के माहौल, शिक्षक और पाठ्यक्रम यह सब मिलकर गुणवत्ता का निर्माण करते हैं। इस लिए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों में क्षमता निर्माण के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव निम्नवत है।

** सुझाव -----*

शिक्षकों में क्षमता निर्माण के माध्यम से शिक्षकों को छात्र केंद्रित शिक्षण पद्धति,सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षा के साथ-साथ प्रशिक्षण भी मिलना चाहिए जो उन्हें उपकरण, शिक्षण सहायक सामग्री और प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग करने में सक्षम बनाएं। जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रत्येक बच्चा सीखने से अधिकतम लाभ प्राप्त कर सके।

* क्षमता निर्माण को निरंतर चलने वाली प्रक्रिया के रूप में लागू करना चाहिए जो शिक्षकों को अपने कार्यों को बेहतर तरीके से अपने कामों को अंजाम देने के लिए सुसज्जित करें।

* एक अच्छे शिक्षक में मजबूत संचार कौशल सहानुभूति और आजीवन सीखने के लिए जुनून जैसे गुण होने चाहिए। यह गुण न केवल एक सकारात्मक और आकर्षक कक्षा के माहौल को बढ़ावा देते हैं, बल्कि छात्रों की सफलता को भी बढ़ाते हैं और सीखने के प्रति प्रेम को प्रेरित करते हैं।

* किसी भी शिक्षा प्रणाली की सफलता की कुंजी शिक्षा की होते हैं, शिक्षकों के निर्माण पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद अध्यापक शिक्षा प्रदान कर रही संस्थाओं पर कड़ी नजर रखें तथा सुविधा विहीन संस्थाओं को अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम चलाने की अनुमति न दे।

* शिक्षकों के प्रशिक्षण में देश की बदलती हुई स्थिति एवं नवीन आदर्श के अनुसार प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए।

* व्यवसायिक कुशलता के साथ-साथ शिक्षकों को मार्गदर्शक,प्रेरक और रक्षक के रूप में प्रशिक्षित किया जाए जिससे शिक्षक छात्रों में नैतिकता, चरित्रनिर्माण और समग्र विकास को आकार देने में क्षमता वान बन सके।

* शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान नई विधियों से जैसे सेमिनार, सिंपोजियम, माइक्रो- टीचिंग, लघु समूह में परस्पर क्रिया,प्रोग्राम टीचिंग आदि का प्रयोजन करके शिक्षकों की क्षमता में विकास करना सुनिश्चित करें।

* शिक्षकों को गैर शैक्षणिक कार्यों से मुक्त किया जाए,तथा समय-समय पर शिक्षकों को उपयुक्त संसाधन उपलब्ध कराए जाएं,जिससे शिक्षक उनका उपयोग छात्रों के विकास में कर सके।

इसके अतिरिक्त छात्रों की उपलब्धि में योगदान देने के लिए व्यापक नियमित क्षमता निर्माण के माध्यम से शिक्षकों को छात्र केंद्रित शिक्षण पद्धति, सामाजिक एवं भावात्मक शिक्षा के साथ-साथ प्रशिक्षण भी दिया जाए जो उन्हें शिक्षण सहायक सहायक सामग्री और प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग करने में सक्षम बनाएं,जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रत्येक बच्चा सीखने से अधिकतम लाभ प्राप्त कर सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ -

1-डॉ गुप्ता एस•पी•भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएं पृष्ठ 402

2-डॉ गुप्ता एस •पी•भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएं पृष्ठ 402

3-डॉ रस्तोगी के•जी• भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्या पृष्ठ संख्या 304

4. डॉ•गुप्ता एस•पी• शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएं पृष्ठ संख्या 701

5. डॉ•गुप्ता एस•पी• भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएं पृष्ठ 363।

6. डॉ•पचौरी गिरीश, उद्दीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,पृष्ठ संख्या 31

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-02, Dec.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2024/09

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ मानिक मोहन शुक्ल

For publication of research paper title

"गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों में क्षमता निर्माण"

Capacity Building of Teachers, for quality Education

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-02, Month December, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com